5. निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :4×2=8

(स) अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घनआनँद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौं कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।,

(द) चिरजीवौ जोरी, जुरै क्यौं न सनेह गंभीर।
को घटि ए बृषभानुजा, वे हलधर के बीर।।
सोहत ओढ़ै पीतु पटु स्याम, सलोनैं गात।
मनौ नीलमनि-सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

इकाई - तीन

6. 'कबीर का काव्य ज्ञान और भक्ति का समन्वय है'- सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 7

7. तुलसी की भक्ति भावना की विवेचना कीजिए। 7

इकाई - चार

8. बिहारी के काव्य में श्रृंगार के दोनों पक्षों का स्वाभाविक चित्रण है- इस कथन की समीक्षा कीजिए। 7

9. भूषण की कविता में राष्ट्रीय चेतना विद्यमान है- सिद्ध कीजिए। 7

A **(Printed Pages 4)**

Roll. No. _____

A-193

बी.ए. (प्रथम) परीक्षा, 2015

(रेगुलर एवं एक्जेम्पटेड)

हिन्दी

प्रथम प्रश्न-पत्र

(मध्ययुगीन काव्य)

समय : तीन घण्टे **पूर्णांक : 50**

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। इनमें से **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। इसके अतिरिक्त **चार** इकाइयों में से प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 2×10=20

(क) ज्ञानाश्रयी शाखा के चार कवियों के नाम लिखिए।

(ख) कबीर के राम और तुलसी के राम में अंतर बताइये।

(ग) तुलसीदास की ब्रजभाषा में रचित दो रचनाओं के नाम बताइये।

(घ) रीतिमुक्त और रीतिबद्ध काव्य में अंतर बताइये।

(ड.) जायसी की तीन प्रमुख रचनाओं के नाम बताइये।

(च) अष्टछाप के चार कवियों के नाम बताइये।

(छ) भक्तिकाल की दो विशेषताएँ बताइये।

(ज) कवितावली का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(झ) बिहारी के काव्य की चार विशेषताएँ बताइये।

(ञ) लंबा मारग दूरि घर, विकट पंथ बहु मार
कहौ संतो क्यूँ पाइये, दुर्लभ हरि दीदार ।'
का आशय स्पष्ट कीजिए।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित अवतरणों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए:4×2=8

(क) हरि जननी मैं बालक तेरा।
काहे न औगुण बकसहु मेरा।।
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहै न तेते।
कर गहि केस करै जो घाता, तऊ न हेत उतारै माता।।
कहै कबीर एक बुधि बिचारी, बालक दुखी दुखी महतारी।।

(ख) ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी।।
जौ लगि अहै पिता कर राजू । खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारून ससुर न निसरै देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर पुनि सो करै दहुँ काह
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह।।

3. निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।4×2=8

(ग) निसि दिन बरसत नैन हमारे
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब तैं स्याम सिधारे।
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।
आंसू सलिल सबै भइ काया, पलन जात रिस टारे।
सूरदास प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहैं बिसारे।

(घ) को भरिहै हरि के रितए, रितवै पुनि को हरि जो भरिहै।
उथपै तेहि को जेहि राम थपै? थपिहै तेहि को हरि जो टरिहै?
तुलसी यह जानि हिए अपने सपने नहिं कालहु ते डरिहै।
कुमया कछु हानि न औरन की जो पै जानकीनाथमया करिहै।।

इकाई - दो

4. निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :4×2=8

(अ) अजौं तर्‌यौना ही रह्‌यौ श्रुति सेवत इक-रंग
नाक-बास बेसरि लह्‌यौ बसि मुकतनु कै संग।।
तो पर वारौं उरबसी, सुनि, राधिके सुजान।
तू मोहन कै उर बसी ह्‌वै उरबसी-समान।।

(ब) कामिनी कंत सों जामिनि चंद सों दामिनि पावस-मेघ-घटा सों।
कीरति दान सों सूरति ज्ञान सों प्रीति बढ़ी सनमान महा सों।
भूषन भूषन सों तन ही नलिनी नव-पूषनदेव-प्रभा सों।
जाहिर चारिहुँ ओर जहान लसै हिंदुआन खुमान सिवा सों।